रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

सा विद्या या विमुक्तये

SVMM
Roopangarh

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रुपनगढ (अजमेर) राज.

144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

हिन्दी साहित्य

B.A. III year

द्वितीय प्रश्न पत्र कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)

कहानी संग्रह

(1) उसने कहा था — चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

(2) पुरस्कार — जयशंकर प्रसाद

(3) पूस की रात — प्रेमचन्द

(4) ताई — विश्वम्भरनाथ शर्मा

(5) नशा — मन्नू भण्डारी

(6) एक गौ — जैनेन्द्र कुमार

(7) जगार — ज्वाला प्रसाद

(8) मेरा घर कहाँ — नासिरा शर्मा

(9) खोई हुई दिशाएँ — कमलेश्वर

उपन्यास → ज्यों मेहँदी को रंग उपन्यास मृदुला सिंह

उपन्यास

ज्यो मेंहदी को रंग

उपन्यास की मूल समस्या → विकलांगो की अपंगता की समस्या

उपन्यास के पात्र → दादा जी, शर्मा जी, मास्टर जी, युनुस मियाँ, मैनेजर, महेश, शालिनी, महिमा, रेखा

समस्या प्रधान उपन्यास

उपन्यास का उद्देश्य →

(1) व्यक्तिगत प्रेरणा का प्रसारण
(2) जीवन को सहजता से जीने का सन्देश
(3) लोकहित के सत्प्रेरणा
(4) मानव - सेवा का महत्व बतना
(5) जिजीविषा की प्रेरणा देना

अन्यास की विशेषता

(1) करुणापूरित प्रसंग
(2) जीवन्त पात्र
(3) जीवन - मूल्यो की स्थापना
(4) भावनापुष्ट काव्यात्मक शिल्प
(5) व्यर्थशीलता
(6)

शालिनी की चारित्रिक विशेषताएँ

(1) चंचल युवती
(2) सुन्दरता की मूर्ति
(3) उदात्त एवं विशिष्ट चरित्र
(4) जिजीविषा से मण्डित
(5) स्मृतिजीवी
(6) भावुक युवती
(7) विचारशील नारी
(8) वृद्ध - निश्चयी
(9) वाकपटु
(10) निर्णय - कुशल
(11) अनुशासित व्यक्तित्व
(12) सेवाभावी व्यक्तित्व

कहानी उसने कहा था

कथानक → उसने कहा था कहानी का कथानक द्वितीय विश्वयुद्ध से सम्बन्धित एक घटना पर आधारित है सिख राइफल्स के सैनिक फ्रांस और बेल्जियम के एक मोर्चे पर तैनात रहते हैं वे शत्रुओं का सामना करने के लिए खंदकों मे पड़े रहते हैं उनमे सूबेदार हजारासिंह जमादार लहनासिंह सिपाही बोधासिंह वजीरासिंह आदि सम्मिलित रहते हैं। जर्मन सैनिक सिखो की टुकड़ी पर छिपकर आक्रमण करते हैं इसमे लहनासिंह घायल हो जाता है वह अपना घाव दूसरो को नही बतलाता है लहनासिंह बेहोश हो जाता है उस बेहोशी मे उसे पूर्व घटना का स्मरण करता है अन्त मे वजीरासिंह की गोद मे अपना सिर रखकर बेहोशी मे बड़बड़ाते हुए वह अपने प्राण त्याग देता है इस तरह कहानी का कथानक मार्मिक घटना पर आधारित है इसमे मानवीय भावो का कलात्मक एवं मार्मिक चित्रण हुआ है।

कथानक की विशेषताएँ

(1) दृश्य-निरूपण
(2) कथानक का विकास
(3) नाटकीयता का समावेश
(4) कथानक की सम्भाव्यता
(5) कलात्मक समाप्ति
(6)

कहानी का उद्देश्य

(1) आदर्श स्नेह-प्रीति का निर्वाह
(2) वचनपालन का आदर्श
(3) कर्तव्यनिष्ठा का सन्देश

लहनासिंह की चारित्रिक विशेषताएँ

(1) प्रमुख कथा चरित्र
(2) वीरत्व का प्रतीक
(3) निर्भय और साहसी व्यक्तित्व का धनी
(4) प्रत्युत्पन्नमति
(5) भावुक व्यक्तित्व
(6) प्रेमी व्यक्तित्व (7) कर्तव्यपालक
(8) वचन पालक

पुरस्कार

कहानी की मूल संवेदना — प्रसाद की पुरस्कार
में मधूलिका को
ऐसा नारी पात्र बताया गया है जो कि एक ओर
अपने पूर्वजों की गरिमा को ध्यान में रखकर
देश-प्रेम एवं त्याग-भावना का परिचय देती है
लेकिन दूसरी ओर अभावों से व्यथित होकर वह
मगध से निर्वासित राजकुमार अरुण से प्रेम
करने लगती है और उसके कहने पर राजा से
श्रावस्ती दुर्ग के दक्षिणी भाग की जमीन माँग
लेती है उस समय उसके मन में अपने प्रेमी
को लेकर तथा अपने सुखी जीवन की कामना
को लेकर सुन्दर भाव जाग्रत हो जाते हैं लेकिन
अरुण द्वारा रात्रि में श्रावस्ती दुर्ग पर आक्रमण
करने की योजना सुनकर उसके हृदय में
व्यक्तिगत-प्रेम तथा देश-प्रेम के मध्य द्वन्द्व
उभरता है तब वह एक ओर राष्ट्र-प्रेम का
निर्वाह करने के लिए सेनापति को अरुण के
आक्रमण की सूचना देती है तो दूसरी ओर अन्त
में राजा से अपने लिए पुरस्कार रूप में
प्राणदण्ड की याचना करती है। इस प्रकार
कहानी की मूल संवेदना व्यक्तिगत प्रेम का आदर्श
बतलाते हुए राष्ट्र प्रेम की नैतिकता अपनाने की व्यंजना

पूस की रात

सामाजिक यथार्थ एवं मानवीय संवेदना पर आधारित कहानी।

पूस की रात कहानी की समीक्षा

(1) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
(2) मानवीय आदर्शों का अंकन
(3) सामाजिक यथार्थवाद का चित्रण
(4) पात्रों और परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण
(5) घटनाओं का स्वाभाविक विकास
(6) कहानी के तत्वों की दृष्टि से सफल कहानी।
(7) दर्दनाक यथार्थ की निर्मम अभिव्यक्ति
(8) आत्म-निर्वासन की प्रक्रिया की अभिव्यक्ति
(9)

प्रेमचन्द की कहानियों का मूल संदेश :-

(1) ग्रामीण जीवन का यथार्थ
(2) नागरिक समाज
(3) नारी जीवन
(4) पारिवारिक जीवन
(5) भारतीय जनजीवन और संदेश
(6) समकालीन जीवन की गहरी पहचान
(7) मानवीय संवेदनाओं की प्रचुरता
(8) सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार
(9) सुधारवादी दृष्टिकोण से अनुप्रेरित
(10) मानवतावादी सन्देश
(11)

ताई

ताई कहानी की कथावस्तु की समीक्षा

(1) सम्भाव्य एवं रोचक
(2) सुसंगठित एवं कौतूहलवर्धक
(3) बाल - मनोविज्ञान की व्यंजक
(4) संक्षिप्त एवं आदर्श-मण्डित

रामेश्वरी का चरित्र चित्रण

(1) ईर्ष्या - द्वेष से ग्रस्त
(2) अन्धविश्वासी
(3) ममतामयी
(4) दुविधा से आक्रान्त.
(5) सरल - हृदय की नारी
(6) अन्य विशेषताएँ

ताई कहानी की मूल संवेदना

(1) अन्धविश्वासी एवं भाग्यवादी न बनना
(2) ईर्ष्या द्वेष पर मातृत्व भाव की विजय बताना।
(3) पारिवारिक मर्यादा का पालन करना
(4) सुकृति का महत्व बतलाना
(5)

बाबू रामजीदास की चरित्रगत विशेषताएँ

(1) सहज स्नेही स्वभाव
(2) अन्धविश्वास से मुक्त
(3) भाग्यवादी
(4) सन्तान एवं सुकृति की कामना
(5) समझदार व्यक्ति,
(6) विवेकशील एवं सज्जन
(7) सन्तोषी स्वभाव
(8) सहानुभूति रखने वाला

नशा

नशा कहानी की कथावस्तु → नशा कहानी मानवीय संवेदना पर आधारित है। इसमे शेकर नामक पात्र शराब के नशे मे घर आता उसके हाथ मे शराब की खाली बोतल थी।

कहानी के माध्यम से यह समझाने का प्रयास है कि नशे से कोई किसी भी घर को बर्बाद किया जा सकता है।

नशे से

नशा कहानी की कथावस्तु की विशेषताएँ

1. उत्पाद्य एवं मौलिक
2. संक्षिप्त तथा रोचक
3. गतिशील एवं क्रमबद्ध
4. स्वाभाव्य एवं जिज्ञासापूर्ण
5. संगठित एवं विकसित

आनन्दी का चरित्र-चित्रण

1. सहनशील नारी
2. परिश्रमी
3. चिन्तनशील
4. ममतामयी माता
5. प्यार-लगाव से युक्त
6. मिलनसार स्वभाव
7. भावुकता से परिपूर्ण
8. आदर्श नारी

नशा कहानी का तात्विक मूल्यांकन

1. कथावस्तु
2. पात्र तथा चरित्र-चित्रण
3. कथोपकथन
4. देशकाल एवं वातावरण
5. भाषा शैली
6. उद्देश्य

एक गौ

कथानक → एक गौ कहानी मे हीरासिंह एक गाय और सेठ से सम्बन्धित कथानक रचकर कहानीकार ने समाज के लिए कई उपयोगी बाते बताई है हीरासिंह के पूर्वज जमींदार थे परन्तु अब वह गरीबी का जीवन व्यतीत कर रहा था उसने एक गाय पाल रखी थी। गरीबी की दशा मे वह अपने गाय को बेचकर कहीं नौकरी कर लेने का विचार किया था। उसे अपने ही गाँव मे गाय को बेचने मे तो बेइज्जती महसूस होती थी इसलिए अवसर मिलने पर उसने अपनी सुन्दरी गाय सेठ को बेच दी थी। जब गाय वहाँ हीरासिंह की याद के कारण पूरा दूध न दे पायी और दुखी रहने लगी तो हीरासिंह ढाई सौ रूपये का तावान भर कर भी गाय वापस घर ले आया था।

एक गौ कहानी की समीक्षा

1. कथावस्तु
2. कथोपकथन
3. पात्र योजना
4. चरित्र चित्रण
5. देशकाल एवं वातावरण
6. भाषा – शैली
7. उद्देश्य

कहानी की विशेषता

1. उदार प्रेम
2. कर्तव्यपरायणता एवं वफादारी
3. आपसी विश्वास
4. दायित्व बोध
5. स्वाभिमान
6. सत्य व्यवहार
7. दिखावटीपन का विरोध

जगार

जगार कहानी का कथानक अतीव संक्षिप्त है। इसमें राजेश नामक पात्र गाँव में अपने भाई के पास आता है तथा जनई यादव के द्वारा खेत पर किये गये कब्जे को हटाता है इसके लिए वह गाँव के लोगो में जागृति लाता है तथा सारे गाँव को जनई के अन्याय से मुक्त कराता है। प्रस्तुत कहानी का प्रारम्भ अतीव सरल एवं सामान्य रूप से हुआ है कथानक के मध्य में पात्रो के वार्तालाप आदि से इसका समुचित विकास दिखाया गया है तथा कथानक का अन्त प्रभावशाली ढंग से हुआ है इस तरह कहानी का कथानक संक्षिप्त और पर्याप्त सुगठित है।

कथावस्तु की विशेषताएँ

1. संक्षिप्त एवं सुगठित
2. प्रासंगिक कथावस्तु का विन्यास
3. रोचकता एवं कौतूहल से युक्त
4. सम्भाव्यता एवं सोद्देश्यता
5.

राजेश की चरित्रगत विशेषताएँ

1. आत्मकारी एवं समादरशील
2. विवेकशील
3. समझदार नागरिक
4. सहयोग की अभिलाषी
5. दुर्व्यसनो से मुक्त
6. दृढ़ निश्चयी
7. जन - जागरण चेतना वाला
8. अन्याय - असमानता का विरोधी

जगार कहानी की तात्विक समीक्षा

1. कथावस्तु
2. पात्र या चरित्रांकन
3. कथोपकथन
4. देश काल व वातावरण
5. भाषा - शैली
6. उद्देश

मेरा घर कहाँ

नासिरा शर्मा की कहानी 'मेरा घर कहाँ' की कथावस्तु इस प्रकार है कि लाली धोबिन अपने पति के साथ आजीविका की तलाश मे गाँव से शहर मे आती वह तीन छोटे बच्चो के साथ अड्डे पर जाती और घर-घर से कपड़े लाकर उन पर इस्तरी करती। उसकी बड़ी लड़की सोना दस ग्यारह साल की हो रही थी तो वह मोहल्ले के लड़को के लिए आकर्षण का केन्द्र थी लाली धोबिन का परिवार पाश कालोनी के सामने नाले पर बसी कच्ची बस्ती मे रहता था। लाली धोबिन का परिवार के पति राजा को पत्नी पीने की लत लग गई थी इस कारण वह एक दिन नशे की हालत मे चल बसा तब लाली अपनी लड़की को तथा अपनी इज्जत बचाने की दृष्टि से दिगम्बर दादा के घर बैठ गयी दिगम्बर की घर वाली मर गई थी, वह सम्पन्न व्यक्ति था और कच्ची बस्ती मे उसका रॉब था उसने सोना का विवाह बड़ी धूमधाम से करा दिया था तब सोना अपने पति नन्कू के साथ मंगोलपुरी मे रहने लगी उनके साथ नन्कू की माँ विधवा फूफी और ताई भी रहती थी वहाँ पर सोना का रखरखाव नन्कू को अच्छा नही लगा। नन्कू ने बिना तलाक दिये सोना को घर से निकाल दिया।

कहानी की समीक्षा

इस कहानी का कथानक संक्षिप्त और रोचक है इसमे मुख्य कथा तो सोना की ही है वह जिस तरह संघर्ष करती है तथा अभावग्रस्त एवं शोषण से पीड़ित रहकर भी स्वाधीन जीवन यापन करती है वह काफी प्रेरणादायी है। कथानक सम्भाव्यता गुण से युक्त जिज्ञासापूर्ण और सुगठित है इसमे सीमित पात्र है तथा कथानक का विकास उचित ढंग से हुआ है लाली, रमजान, दिगम्बर दादा आदि के प्रासंगिक कथानकों से मुख्य कथा का विकास दिखाया गया है। इसमे मानवीय संवेदना का सुन्दर समावेश हुआ है तथा सभी घटनाक्रम परस्पर सम्बन्धित है इन सभी विशेषताओ से मेरा घर कहाँ कहानी का कथानक उत्कृष्ट है।

सीना का चरित्र चित्रण

1. चंचल स्वभाव की बाला
2. अकड़ रखने वाली
3. निडर रहने वाली
4. पति द्वारा परित्यक्ता
5. शोषण एवं यातना से ग्रस्त
6. इज्जत की रक्षा करने वाली
7. परिश्रमी
8. हंसमुख स्वभाव
9. आत्मिक सुख की आकांक्षी

खोई हुई दिशाएँ :-

मूल संवेदना कहानी की → प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया गया है कि आधुनिक काल में महानगरीय जीवन ने मनुष्य को अनेक विसंगतियों और वि से गुजरने के लिए विवश कर दिया है यान्त्रिक सभ्यता एवं अतिव्यस्तता के कारण मनुष्य लोगों की भीड़ में भागता रहता है फिर भी वह अपनी पहचान खो रहा है तथा अकेलेपन से सन्त्रस्त रहता है।

महानगरीय जीवन की स्थितियाँ

1. अतिव्यस्त जीवनचर्या
2. अजनबीपन का सन्त्रास
3. पहचान खोते जा रहे व्यक्ति की पीड़ा
4. महानगरों की भीड़ भाड़ की स्थिति

चन्दर का चरित्र चित्रण

1. अकेलेपन की अनुभूति से पुर्ण
2. अपनेपन की तलाश से ग्रसित
3. सम्बन्ध जोड़ने मे प्रयासरत
4. खोखलेपन से व्यथित
5. सरल स्वभाव वाला

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

हिन्दी साहित्य – तृतीय वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र – आधुनिक काव्य

निर्धारित रचनाएँ –

(1) अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध
 (क) इन्द्र का गर्वहरण, प्रिय प्रवास साहित्य
 (ख) 'एक बूंद' तिनका कविताएँ

(2) मैथिलीशरण गुप्त
 (क) सखी वे मुझसे कहकर जाते
 (ख) साकेत (नवम सर्ग)

(3) जयशंकर प्रसाद
 (क) श्रद्धा सर्ग – कामायनी

(4) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
 (क) जागो एक बार
 (ख) बादल राग

(5) सुमित्रानन्दन पंत
 (क) नौका विहार
 (ख) परिवर्तन

(6) रामधारीसिंह दिनकर
 (क) कुरुक्षेत्र (छठा सर्ग)

(7) गजानन्द माधव मुक्तिबोध
 (क) लकड़ी का बना रावण
 (ख) भूल – गलती

(8) धर्मवीर भारती → कनुप्रिया

(9) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय
 (क) हरी घास पर क्षण भर (ख) बावरा अहेरी

(10) महादेवी वर्मा – दीपशिखा

(11) नरेश मेहता – (क) सूर्यदीप
 (ख) वैष्णव यात्रा

अयोध्यासिंह उपाध्याय

उपनाम - हरिऔध

मूल नाम - अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

जन्म - 15 अप्रैल 1865 आजमगढ़ U.P.

निधन - 16 मार्च 1947 आजमगढ़ U.P.

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध का जन्म U.P. के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद मे 1865 ई. मे हुआ था उनकी शिक्षा दीक्षा घर पर ही हुई जहाँ उन्होंने ~~उर्दू~~ उर्दू, संस्कृत फारसी बांग्ला और अंग्रेजी भाषा और साहित्य का अध्ययन किया ~~था~~ उनके कार्य-जीवन का आरंभ मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक के रूप मे हुआ और बाद मे कानूनगो के रूप मे भी कार्य किया इसके बाद फिर उन्होंने

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे अवैतनिक प्राध्यापक के रूप मे सेवा दी।

इनकी प्रतिष्ठा खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप मे स्थापित करने वाले प्रमुख कवियो के रूप मे है और इस क्रम मे इनकी कृति प्रिय प्रवास को खड़ी बोली का महाकाव्य कहा जाता है यही कृति इनकी सर्वाधिक प्रसिद्धि का भी कारण है हिन्दी के तीन युगो - भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और छायावादी युग मे विस्तृत इनका रचनात्मक योगदान उन्हे हिंदी कविता के आधार स्तंभो मे एक के रूप मे स्थान दिलाता है।

प्रमुख कृतियाँ → प्रिय प्रवास वैदेही वनवास काव्योपवन रसकलश बोलचाल चोखे चौपदे चुभते चौपदे, पारिजात, कल्पलता, मर्मस्पर्श पवित्र पर्व, दिव्य दोहावली, हरिऔध सतसई,

उपन्यास - ठेठ हिन्दी का ठाट
अधखिला फूल
रुक्मिणी परिणय
प्रद्युम्न विजय व्यायोग

ललित निबन्ध - संदर्भ सर्वस्व
आत्मकथात्मक रचना - इतिवृत्त
आलोचना - हिंदी भाषा और साहित्य का विकास विभूति
ब्रजभाषा
संपादन - कबीर वचनावली

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

जीवन परिचय →

जीवन दर्शन के प्रति आदर्श →

(1) लोक सेवा की भावना

(2) सांस्कृतिक आदर्श और सम्बन्धी आस्था

(3) परिवार एवं देश के प्रति आदर्श

(4) मानवतावादी दृष्टि

(5) बुद्धिजीवी दृष्टिकोण

एक थाल मोती से भरा सबके सिर पर औंधा धरा
चारो ओर वह थाली फिरे मोती उससे एक न गिरे

अथवा

एक गाजा की गाजा, हेर गाजा कुना
ए अरवि साजन, ना सखि कुन्ना

काव्य सौन्दर्य

भावपक्ष

1. लोक सेवा की भावना
2. सांस्कृतिक आदर्श और सम्बन्धी आस्था
3. परिवार एवं देश के प्रति आस्था
4. मानवतावादी दृष्टि
5. बुद्धिजीवी दृष्टिकोण

कलापक्ष

1. भाषा शैली सौन्दर्य
2. अलंकार विधान
   रूपक, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा
3. छन्द योजना
4. प्रतीकात्मकता

1. काव्य सृजन
2. उपन्यास लेखन और हरिऔध
3. नाटककार हरिऔध

मैथिलीशरण गुप्त

जन्म 3 अगस्त 1886 मृत्यु 12/12/1964

इनका जन्म चिरगाँव झांसी मे हुआ था ये द्विवेदी काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे इनकी प्रथम पुस्तक रंग मे भंग है ये रामभक्त कवि थे

रचनाए → जयद्रथवध, साकेत, पंचवटी सैरन्ध्री बक संहार, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जय भारत हिडिम्बा, विष्णुप्रिया एवं रत्नावली आदि

दो महाकाव्य, 19 खण्डकाव्य, काव्यगीत नाटकाये आदि इनकी कविता मे गर्व और गौरव राष्ट्रीयता की भावनाए देखने को मिलती है ये राष्ट्रकवि के रूप मे विख्यात कवि है ये रामभक्त कवि थी थे इनके द्वारा साकेत भी लिखा गया।

श्री मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्राणवत्ता प्रदान करने वाले राष्ट्रीय चेतना एवं भारतीय संस्कृति के गायक थे वे स्वभाव से विनम्र शिष्ट और वैष्णव संस्कारों से अनुप्राणित थे गुप्त जी ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सन् 1908 में रंग में भंग कृति के साथ पदार्पण किया इसके बाद भारत-भारती के प्रकाशन से उन्हें हिन्दी कवि समाज में उच्च स्थान प्राप्त हो गया उस काल में हिन्दी भाषा को वर्तनीगत संशुद्धि का जो कार्य आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने प्रारम्भ कर रखा था उस कार्य में गुप्तजी भी सम्मिलित हो गये और द्विवेदीजी की प्रेरणा से खड़ी बोली हिन्दी का परिष्कार करने लगे इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा एवं परिपक्वता में गुप्त जी का पूर्ण सहयोग रहा आचार्य द्विवेदीजी ने इनके काव्य रचनागत संस्कारों को जो दिशा प्रदान की तो महात्मा गांधी के प्रभाव से इनके वैष्णवी संस्कार जागृत हुए। इस प्रकार के सुधारवादी आन्दोलनों का गुप्त जी पर अतीव प्रभाव रहा और यही प्रभाव उनकी समस्त रचनाओं में देखा जाता है

गुप्त जी की काव्यगत विशेषत

① राष्ट्रीय चेतना एवं देश प्रेम

② गाँधीवादी मानवतावादी आस्था

③ हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अ
आओ विचारें बैठकर के ये समस्याएँ सभ

④ वैष्णव संस्कार

निज रक्षा का अधिकार है जन-जन को
सबकी सुविधा का और किन्तु शासन को

⑤ नारी स्वातन्त्र्य एवं सम्मान की भावना →

जग के बाँटे क्या नारी की नग्नमूर्ति ही आई
माँ बेटी या बहिन हाय क्या संग नहीं वह लाई

⑥ समाजोन्मुखी काव्य चेतना

⑦ समन्वित काव्य शिल्प

दीन न हो गोपे सुनो हीन नहीं नारी कभी

नारी - भावना पर लेख

① उर्मिला, यशोधरा, कैकेयी, शकुन्तला

यशोधरा का चरित्र चित्रण

① अनुरागिनी रूप
② पतिपरायणा
③ न्यायप्रियता
④ स्वाभिमानी
⑤ क्षत्राणी रूप
⑥ विरहिनी
⑦ आस्था की प्रतिमूर्ति
⑧ संयम और दृढ़ता

साकेत के नवम सर्ग के काव्य सौन्दर्य

① भारतीय आदर्शों का चित्रण
② विरह वेदना की अभिव्यक्ति
③ नारी व्यथा का प्रकाशन
④ संवेदनशीलता की व्यंजना
⑤ प्रेमनिष्ठा का भाव
⑥ प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण
⑦ सुललित शिल्प पक्ष

उर्मिला का चरित्र-चित्रण

1) पतिव्रतावत्सला
2) सुख भोग से विरत
③ विवेकशील एवं धार्मिक
④ विरहव्यथा से पीड़ित
⑤ करुण क्रन्दन से पूरित
⑥ आत्म सन्तोष से मण्डित
⑦ सहनशीला
⑧ चिन्ताकुल नारी

जयशंकर प्रसाद

जन्म - 1890 मृत्यु 1937 मे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित परिवार मे हुआ था बचपन मे इनके पिता का निधन हो गया

उन्होने संस्कृत पाली हिन्दी उर्दू व अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का गहरा ज्ञान प्राप्त किया

कामायनी इनका लोकप्रिय महाकाव्य है

इनकी कहानियो मे प्रेम समर्पण कर्तव्य व बलिदान की भावना से ओत प्रोत है।

रचनाएँ → झरना, आँसु लहर क

जयशंकर प्रसाद छायावाद के आधार स्तम्भ हैं

काव्य प्रतिभा → आधुनिक हिन्दी काव्यधारा को नया मोड़ देने वाले कवियों में प्रसाद का अन्यतम स्थान है ये केवल कवि ही नहीं थे अपितु नाटककार उपन्यासकार महाकाव्यकार और कहानीकार भी थे इतना ही नहीं ये हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य परम्परा के प्रवर्तक उन्नायक और प्रमुख आधार स्तम्भ थे साथ ही वे सम्पादक निबन्धकार और समालोचक की प्रतिभा से भी ओत-प्रोत थे। प्रसाद मानव-जीवन की सम्पूर्णता और अन्नमय कोष से लेकर आनन्दमय कोष तक के सकल व्यापार रहे हैं मानव के मनोमय कोष में उनकी रुचि रमती जान पड़ती है मानव-जीवन की सम्पूर्णता से अवगत होने के लिए काव्य की अखण्ड स्थिति का बोध अनिवार्य है वस्तुतः हम जिस कल्पना को काव्य कहते हैं और जिस रूप में वह हमारे सामने रूपक होती है वह हमारी चेतना का ही आन्तरिक भाव है

चेतना का साक्षी मानव हो निर्विकार हँसता सा
मानव के मधुर मिलन में गहरे-गहरे धँसता सा

प्रसाद अत्यन्त भावुक स्वच्छन्दतावादी कवि थे प्रकृति और प्रेम उनके काव्य के मुख्य विषय रहे वे छायावाद के प्रवर्तक और उन्नायक कवि थे इस कारण उनके काव्य में रहस्यात्मकता एवं सौन्दर्य चेतना भी दिखाई देती है इनमें ऐतिहासिक गौरव, राष्ट्रीय भावना एवं जन-जागरण भी दिखाई देता है यहाँ उनकी काव्यकला की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रसाद की काव्य कला एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(1) प्रेमानुभूति
(2) निराशा और वेदना
(3) सौन्दर्य चेतना
(4) रहस्यात्मकता
(5) मानवतावादी दृष्टिकोण
(6) नारी भावना
(7) निवृत्ति में प्रवृत्ति का समर्थन
(8) पुरातन के प्रति प्रत्यावर्तन
(9) देश प्रेम की अभिव्यक्ति

कला शिल्प →

1. मानवीकरण
2. रूपक
3. विरोधाभास
4. असंगति
5. प्रतीकात्मकता
6. लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता, चित्रमयता से सज्जित प्रसाद की भाषा अधिक मुग्धकारिणी है।
7. शैली में वर्णनात्मकता और सूक्ष्मता दोनो का योग है।
8. भाषा – तत्सम प्रधान; कोमल, स्निग्ध, प्रभावशाली

कामायनी

कामायनी प्रसाद की सबसे महत्वपूर्ण रचना है ___ प्रकाशन वर्ष था। इसमे कवि के तत्व चिन्तन और उत्कृष्ट काव्योत्कर्ष के दर्शन होते हैं इसके कथानक के मूल स्रोत के लिए प्रसाद ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण और अन्य प्राचीन रचनाओं के ऋणी है। इसमे कथा के सहारे कवि ने जो आधुनिक जीवन दर्शन व्यक्त किया है वह उनकी चेतना और विचार चेतना का भी गहरा सन्दर्भ प्रस्तुत करता है।

छायावाद का चरमोत्कर्ष → कामायनी मे छायावाद का चरमोत्कर्ष विद्यमान है इसमे मनोहारी और चित्रमयी कल्पना अद्भुत लाक्षणिकता के साथ-साथ औचित्यपूर्ण एवं सरस अप्रस्तुत योजना व ध्वन्यात्मकता के साथ-साथ मानव जीवन मे व्याप्त अन्तर्द्वन्द्व को वाणी दी गई है।

मनुष्य नित्यप्रति आगे बढ़ता जा रहा है वैज्ञानिक साधन उसे बौद्धिक विकास के सोपानो

से परिचित करा रहे है वह तुष्ट भी है अतुष्ट भी है किन्तु क्या वैज्ञानिक उपलब्धि उसके जीवन को सही लक्ष्य प्रदान कर रही है क्या मानव सुख चैन से है ? आपाधापी मे प्रसाद ने मनुष्य की इसी समस्या पर विचार किया है।

प्रथम सर्ग चिन्ता → जिसमे वैषम्यों से पीड़ित मानव की चिन्ताग्रस्त स्थिति का वर्णन किया गया है

अन्तिम सर्ग आनन्द — चिन्तित मानव को अखण्ड आनन्द का मार्ग दिखाया गया है।

विस्तृत अर्थ मे सृष्टि के विकास की वह कथा है जो चिन्ता से प्रारम्भ होकर आनन्द मे समाप्त हो जाती है।

मनु के सामने दो विचार → ① संसार नश्वर है कौतूहल चिरस्थायी नहीं विध्वंस स्थायी

② जीवन भी नाशवान है क्षण भंगुर है

ये दोनो विचार मनु को निष्क्रियता की ओर ले जाते है वे सोचते है कि जीवन क्षणभंगुर ही है प्रयत्न करने पर सफलता नहीं मिलती तो व्यर्थ कर्म करने मे क्या लाभ है ?

श्रद्धा → के द्वारा कर्म करने की प्रेरणा दिये जाने पर भी वे निराशा/हताशा से घिरे मनुष्य की तरह संसार को असफलता का घर कहते है।

श्रद्धा बार-बार कर्म की ओर प्रेरित करती है

मनु - जो निराशा हताशा के साथ भोगी विलासी और असन्तुष्ट भी है अपने ही स्वार्थ लाभ की भावना से आगे बढते है फलतः विषमताओ के जाल मे आबद्ध होकर टूट जाते है उन्हे न तो सुख मिलता है और न दूसरो को सुख देते है वे विनाश के मार्ग पर बढ़ चले होते है और इसी कारण उनके ज्ञान इच्छा और क्रिया तीनो ही तीन स्तरो पर दिखाई देते है।

इड़ा — का सम्पर्क उन्हे और भी अधिक विलासी स्वार्थी और स्वकेन्द्रित कर देता है

विषमता का वर्णन → मनु की वैयक्तिक विषमता समस्त सारस्वत प्रदेश के समाज मे विद्रोह की चिंगारी भड़का देती है वे प्रजा के साथ युद्ध मे घायल हो जाते है विषमता बढ़ जाती है

आज भी हम सोचते कुछ हैं करते कुछ हैं और हमारी भावना हमें कहीं अन्यत्र ही ले जाती है। फलतः पारिवारिक संघर्ष और वैषम्य सामाजिक तनाव का रूप धारण कर लेता है यही मनु के साथ भी हुआ। व्यक्ति हुआ सामान्य जनो एवं समाज के कर्णधार नियामको के बीच खाई बढ़ती गई।

जब उनकी सहचरी श्रद्धा उन्हे मिली श्रद्धा जो विश्वास की प्रतिमा थी, विषमताग्रस्त मनु को समरसता की ओर ले गयी

कैलाश शिखर इसका सेतु बना तब वही मनु ज्ञान, इच्छा, क्रिया मे सामंजस्य बिठाने मे सफल हुए। जीवन व्यापी विषमता को समझकर उनको दूर करना ही परम कर्तव्य है

(2) आधुनिक समस्याएँ और कामायनी

(3) कामायनी भावात्मक महाकाव्य

(4) कामायनी का रूपक विधान

(5) आधुनिक मनोविज्ञान

(6) कामायनी का काव्यत्व

कामायनी मे ऐतिहासिक तत्व

पात्र — मनु, श्रद्धा, इडा, मानव देव असुर पुरोहित कामायनी के प्रमुख पात्र

वर्णित घटनाएँ → जल, प्लावन, मनु का पा... यज्ञ करना, श्रद्धा का अवतरण, श्रद्धा के साथ प्रणय, मानव का ज... मनु को पशुकर्म अधिकार लिप्सा, मनु की खोज,

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक माने जाते हैं।

इनका जन्म 21/2/1899 को मेदिनीपुर में हुआ इनके पिता का नाम पंडित रामसहाय त्रिपाठी है वे आधुनिक काल के कवि हैं

रचनाएं → परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना आदि

गद्य रचनाएं – लिली, चतुरी – चमार, अलका, प्रभावती, अप्सरा, काले, निरुपमा आदि

जागो फिर एक बार

परिमल काव्य संग्रह से संकलित है यह कविता देश प्रेम राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन एवं हिन्दी नव जागरण से सम्बन्धित है इसमे कवि ने प्रकृति चित्रण के माध्यम से देशवासियो को जागरणशील बने रहने का सन्देश दिया है।

बादल राग

इसमे निराला जी ने बादल का आह्वन किया है कि वह धरती और आकाश मे सब जगह भयंकर गर्जना करता हुआ वर्षा करे।

जब बादल बरसेगे तभी चारो तरफ आनन्दित वातावरण बनेगा।

छायावादी कवियो मे निराला छायावाद के सच्चे प्रतिनिधि कवि है।

(1) निराला की काव्यगत विशेषताएँ

(1) वैयक्तिकता

(2) प्रकृति का चैतन्यीकरण।

(3) मानवतावाद

(4) रहस्यात्मकता

(5) नारी भावना और प्रणयानुभूति

(6) कल्पना की विवृति और अतिश भावुकता

(7) अवसाद नैराश्य और वेदना

(8) प्रतीकात्मकता

निराला की काव्यगत विशेषताओ की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

काव्यगत भावपक्ष

1. प्रकृति सौन्दर्य का चित्रण
2. प्रेम और श्रृंगार विलास
3. उत्सुकता
4. कल्पना वैभव
5. आध्यात्मिकता
6. व्यंग्य विनोद
7. घनीभूत विषाद
8. राष्ट्रीयता

कलापक्ष

1. भाषा सौष्ठव
2. प्रतीक विधान
3. अलंकार योजना
4. छन्द विधान

निराला काव्य मे प्रकृति चित्रण

1. आलम्बन रूप मे

① दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या - सुन्दरी
परी सी
धीरे - धीरे - धीरे

② छाये आकाश मे काले-काले बादल
झोंके खाते हवा मे सरसों के कान्त
कानो मे बाते बेला और जुही करती

2. उद्दीपन रूप मे
3. उपेक्षात्मक रूप मे
4. आलंकारिक रूप मे
5. पृष्ठभूमि रूप मे

सुमित्रानन्दन पंत

कवि सुमित्रानन्दन पंत हिन्दी के छायावादी युग के चार कवियों में से एक कवि माने जाते हैं इनका जन्म अल्मोड़ा (U.P) के कौसानी गाँव में 20 मई 1900 को हुआ मृत्यु - 28 दिसम्बर 1977 प्रयागराज U.P में हुआ

रचनाएं → प्रथम रश्मि कविता 1919 में लिखी गई वीणा 1927

युगपथ —

चिदम्बरा —

मुक्ति यज्ञ —

सत्यकाम —

स्वर्ण किरण —

स्वर्ण धूलि —

तारापथ —

अंतिमा —

बूढ़ा चाँद —

लोकायतन —

नौका विहार (कविता)

प्रस्तुत कविता में पंत जी ने रात्रि में गंगा की शोभा का वर्णन किया है गंगा में नौका विहार का वर्णन है प्रकृति के सुकुमार कवि पंत कहलाते हैं छायावाद के आधार स्तम्भों में से एक है प्रकृति का मानवीकरण करके उसे भावनात्मक रूप से मानव से जोड़ दिया है।

परिवर्तन कविता

रश्मिबन्ध काव्य संग्रह से परिवर्तन शीर्षक कविता - पंत द्वारा रचित है इसमें कवि ने वर्तमान काल में धरती पर हुए परिवर्तन को लक्ष्य कर अतीत की गरिमामय स्थिति का चित्रण किया है तथा एक प्रकार से वर्तमान और अतीत की तुलना प्रस्तुत की है

नौका विहार कविता का मूल भाव

1. प्रकृति का चित्रण
2. संसार का गतिशील क्रम
3. जन्म मरण का चक्र
4. आशा - आस्थावादी जीवन दर्शन
5.

पंत की काव्य साधना

सौन्दर्य युग	प्रगति युग	आध्यात्मिक
वीणा —	युगवाणी —	स्वर्ण किरण
ग्रन्थि —	ग्राम्या —	स्वर्णधूलि
पल्लव —		उत्तरा
गुंजन —		
युगान्त —		

पन्त का कला पक्ष

1. भाषा सौष्ठव - खड़ी बोली
   माधुर्य, संगीतात्मकता, सुकुमारता
2. अलंकार योजना
   मानवीकरण, रूपक, छन्द
3. छन्द विधान
4. व्यंजना वैभव

उषा का था उर मे आवास
मुकुल का मुख मे मृदुल विकास
चाँदनी का स्वभाव मे भास
विचारों मे बच्चों के साँस

रामधारीसिंह दिनकर

ये हिन्दी के एक प्रमुख लेखक कवि निबन्धकार थे वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस कवि के रूप मे स्थापित है।
राष्ट्रवाद व राष्ट्रीयता को इनके काव्य की मूल भूमि मानते हुए इन्हे युग - चारण व ~~ख~~ भारत के चारण की संज्ञा दी गई।

जन्म - 23 सितम्बर 1908 सिमरियां गांव
मृत्यु - 24 अप्रैल 1974 चैन्नई मे हुई
पिता का नाम - बाबू रवि सिंह
माता का नाम - मनरूप देवी
भाई का नाम - केदारनाथ, रामसेवक सिंह

कुरुक्षेत्र (षष्ठ सर्ग)

कुरुक्षेत्र काव्य मे दिनकर ने भीष्म के चरित्र के माध्यम से एक ओर संसार के लिए शान्ति प्रेम तथा सहयोग का सन्देश दिया है तो दूसरी ओर आधुनिक विज्ञानवाद पर आक्षेप किया है इस अंश मे कवि ने समकालीन स्थिति पर दुःख व्यक्त किया है।

वर्तमान काल मे मानव द्वारा स्वयं को दुःख भोगते रहना तथा दूसरो को भी दुःख कष्ट पहुँचाने की स्थिति का वर्णन किया है।

वर्तमान काल मे मानव समाज मे प्रचलित उन कुप्रवृत्तियो का वर्णन किया गया है जो शोषण अत्याचार घृणा आदि को अहंकार मानव जीवन को कष्टो मे ढकेली रहती है।

भीष्म पितामह और युधिष्ठिर का संवाद

दिनकर की काव्यगत विशेषताएँ

1. युगानुरूप विचार
2. क्रान्ति का स्वर
3. पौरुष की आभा
4. अतीत का गौरवगान
5. कर्मठता
6. अखण्डता का समर्थन
7. सौन्दर्य भावना
8. भावानुकूल भाषा

कुरुक्षेत्र काव्य

भाव पक्ष

1. अनुभूतिगत मार्मिकता
2. सम-सामयिक समस्याओं का चिन्तन
3. मानवतावादी विचारधारा

कला पक्ष

- प्रबन्धात्मकता
- रस योजना
- छन्द विधान
- भाषा शैली सौष्ठव
- अलंकार योजना

गजानन्द माधव मुक्तिबोध

गजानन्द माधव मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि आलोचक निबंधकार कहानीकार तथा उपन्यासकार थे उन्हें प्रगतिशील कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु भी माना जाता है

जन्म – 13 नवम्बर 1917 शेओपुर

मृत्यु – 11 सितम्बर 1964 को हबीबगंज (भोपाल)

इनकी शिक्षा नागपुर विश्वविद्यालय

भारत 1954 थे लेखक कवि निबन्धकार साहित्यिक आलोचक राजनैतिक आलोचक थे।

काव्यगत प्रवृत्तियाँ विशेषताएँ

1. तीव्र एवं विशिष्ट व्यक्तित्व
2. निराशा की तीव्रता
3. आत्मालोचन
4. मार्क्सवादी दर्शन
5. सामाजिक यथार्थ के प्रति आस्था
6. पूँजीवाद का विरोध
7. गम्भीर भावुकता
8. दुरूहता
9. सत्यान्वेषण

काव्यगत प्रवृत्तियाँ

कला पक्ष — भाव पक्ष

1. भाषा सौष्ठव
   खड़ी बोली उर्दू, अरबी, फारसी,
2. छन्द विधान
3. प्रतीक योजना
4. बिम्ब योजना
5. शैली प्रयोग

कविता (भूल गलती)

मुक्तिबोध की भूल गलती शीर्षक कविता से उद्धृत है "चाँद का मुँह टेढ़ा है" संग्रह की प्रथम कविता है

कवि ने इस अंश मे भूल-गलती का मानवीकरण किया है वास्तव मे वह यह व्यक्त कर रहा है कि भूल गलती रूपी बादशाह कवच पहनकर हृदय के आसन पर बैठा हुआ है।

लकड़ी का रावण

गजानन्द माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित लकड़ी का रावण शीर्षक कविता से लिया गया है यह कवि फैंटेसी और प्रतीक-योजना पर आधारित है इसमे एक प्रत्यक्ष द्रष्टा-भोक्ता द्वारा सामाजिक विकृतियो का वर्णन किया गया है।

काव्यगत कला पक्ष

① भाषा सौष्ठव < मिश्रित भाषा
संस्कृत के तत्सम श
उर्दू, खड़ी बोली, अरबी, फारसी

कविता तब मोतियों सीप की
धरती के उस एक अणु के लिए
कि जो नभ की कमजोरी देख गले
लेकिन नभ तो आसमान था —

② छन्द विधान -

③ प्रतीक योजना

④ बिम्ब योजना

⑥ शैली प्रयोग

⑦ फ्रेंसी प्रयोग